५६

३९३

रामसुधा ॥

७

(अङ्क-१)

अर्थात्

श्री सीताराम तत्त्व वर्णन ॥

जिसे

श्री मन्महाराजाधिराज काशिराज द्विजराज श्री ईश्वरीप्रसादनारायण सिंह बहादुर के आनन्दार्थश्रीब्रजचन्दजनने अत्यन्त परिश्रम से अनेक प्रकार के रागोंमें रचनाकिया ॥

पहिलीबार

स्थान लखनऊ ॥

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी

मार्च सन् १८८६ ई० ॥

प्रकटहो कि इस किताबकी रजिस्ट्रीबमूजिबदफ़ा१८ व १९ ऐक्ट २५ सन् १८६०ई० के हुईहै इसकारण इसछापेखानेकीअनुज्ञाबिना कोई छापने का

श्रीगणेशायनमः ।

रामसुधा ॥

—*—

भैरव ॥

. मंत्रमयगणेशविघनहरन सदागाइये । प्रथमजाहि गाइगाइ सकलसिद्धिपाइये १ मंत्रकोस्वरूपसोईगज-मुख ठहराइये । मंत्रभागचारिभुजाभालचन्द्रध्याइये २ अंकुशसीदूबज्ञान रूपसोंचढ़ाइये । मदहरसिंदूरशीश मोदकफलभाइये ३ भक्तमानएकदन्तकेवलसुखदाइये । देवदेवभक्तनकेमानस में आइये ४ । १ ॥

चीखिचीखिचसकनसेरामसुधापीजिये । रामचरित सागरमें रोमरोमभीजिये १ रागद्वेषजगबढ़ाइ काहेको छीजिये । परदुखकनदेखतही आपसोंपसीजिये२ तोरि तारिखैंचिखांचि श्रुतिकोनहिंगींजिये । जामेंरसबनोरहै वहीअर्थकीजिये ३ बहुतकालसंतनके दोउचरणमींजि-ये । देवदृष्टिपाइबिमल युगयुगलौंजीजिये ४ । २ ॥

कैसेधौंरामचरण उपजतअनुरागहै । तनिकोनहिं होतहृदयबिषयरसविरागहै १ बिषयहिकेहेतुकरतजप तपव्रतयागहै । बहुतजनमकोटिनको जमकिरह्योदाग है २ ज्ञानिनकेरगरनसे प्रकटहोतआगहै । यामेंकछुअ-चरजनहिंमायाकोवागहै ३ केवलसतसंगपाइ जगत देवभागहै । रामनामरटतरटतलगतरामतागहै ४ । ३ ॥

सोरठ। अवधकीमहिमाअपरंपारगावतहैंश्रुतिचार। बिस्मितअचलसमाधिनसेजोध्याईवारम्बार। तातेनाम अयोध्यागायो यहऋगवेदप्रकार १ रजधानीपरबल कंचनमयआठचक्रनवद्वार।तातेनामअयोध्यापावन अस यजुकहतबिचार २ अकारयकारउकारदेवत्रय ध्याईजो लखिसार। तातेनामअयोध्याऐसोसामकरतनिरधार३ जगमगकोशजहांअपराजित ब्रह्मदेवआगार। तातेनाम अयोध्याऐसो कहतअथर्वउदार ४। ४॥

झलकिरहीश्रुतिसीसरयूमाय । ब्रह्मोत्तरमानसते निसरीमिलीअवधिसेआय १ स्वच्छबरणपदक्रमसुर जाके अंगरहेहरषाय। जोब्राह्मणकोजीवनधनहै जहँ बिहरतरघुराय २ शुचिताकर्ममिठासभक्तिहै धाराज्ञान सोहाय। कांडसच्चिदानन्दरूपजनु प्रकटेअवसरपाय ३ जाकेदरशपरशतेबाढ़ै रघुबरभक्तिअमाय। जाकेतीरदेव मुनिमानसबसेरेगुमिसछाय ४। ५॥

अवधकेसंतनकीबलिहार त्रिभुवनकेशृंगार॥ निगमागम पुराणस्मृतिसंयुत करिचारिउउपचार। प्रति दिनरामचन्द्रपदअरचत परमभक्तिअनुसार १ भाव तिलकमालाकोसमुझत परिहरिहृदयविकार। नानामत कहँएकजानिकै जीतिरहेसंसार २ अरचतचरचतपरचत खरचत परमारथव्यवहार। यहिबिधिउत्तमकालचिता-वत चिन्ततरामउदार ३ जिनकेहृदयबदनकमलनमेंरामा भँवरगुंजारादेवधरमएकैदृढ़राजतकेवलपरउपकार४।६।

बसंत। रामस्वरूपअवधनिजजानोआदिशक्तिसरयू

लहराय। इनदोउनकोयाकोशलमें नितबिहारलखिमन हरषाय ॥ अवधहिमेंप्रभुप्रकटभयेहैंअवधहिमेंपुनिरहे समाय । इनचरितनसेदेवअवधदोउ एकरूपइतनो ठहराय ७ ॥

कवनिउँयोनिअवधजोपावैतौयहजीवकृतारथहोय। नहिंतौब्रह्मलोकपाइउकै गिरिहैबहिबहिमरिहैरोय ॥ अवधहिपाइतजतहैं जेतन करगतनिजहितडारेउखोय। रामदेवकेचरणशरणमें सबतजिसुखसेरहियेसोय ८ ॥

लालगुलालसुमनजहँमहकत ऐसीसुभगअवधकी बाग। डारडारऔपातपातमेंउमगतरामचरणअनुराग॥ चारिउफलनेवछावरकीजै जाकेफलनकेअधिकसोहाग। रामदेवजामेंनितबिहरत तेनिरखहिंजिनकेवड़भाग ९ ॥

संतनकेमन्दिरमन्दिरमें नितमंगलनितहोतउछाह। जन्ममहोत्सवसुखदेखनकीदेवहुकेमनउपजतचाह॥प्रभु पदरतिकीअवधसुगतिकीअगतिनहूंकोकरतनिबाह।सब कीअवधअवधपैयाकीमहिमानिरवधिपरमअगाह १०।

धन्यअवधकीधरतीपावनि पगपगमेंजहँलोटरतयागा रामचन्द्रपांयनकेमखमलसुनिसुनिउरउपजतअनुराग। तीरथदेवौठांवठांवकेइहांबसेलखिअचलसोहाग । पुरी शिरोमणिअवधजानिकैअबयाहीसेलागइलाग११ ॥

परमसुशीलअवधकेबासी जिनकेबचनसुधारसभरे। रामकथापरजिनहिंप्रेमअति छापतिलकशुचिमालधरे॥ अपनेअपनेधर्मकरतसब संततिसम्पतिसुफलफरे। इष्ट देवरघुपतिहैंतहितेदुनोंलोकसुढारढरे १२ ॥

अवधसमीपरुचिरबनसोहैबनबासिनकोपरमअधार।
लताकुंजघनजहँइकंतमन ध्यानधरहिंमुनित्यागिबिकार।
अतिसुन्दरसरसीसरतरिवर जेजानतकेवलउपकार ।
पशुपक्षिनसेडारपातसेनिसरतरामहिंकोउदगार १३ ॥
प्रभुपदअंकितअवधपुरीको रजकबअंगनलागैगो ।
सन्तनकीमहिमासुनिसुनिकै कबमेरोमनपागैगो ॥ गुरु
देवसैनसे सैनसहितकबबिखरिमोहदलभागैगो । राम
रूपझलकावनमतिमें शुद्धज्ञानकबजागैगो १४ ॥

परमअमृतपायसजोआवासोप्रभुके आवनकोद्वार ।
याहीकोमुनिविष्णुकहतहैं याहीकोमानतओंकार । उभय
योगतेजीवचराचर होतइहांनहिंतौनप्रकार । यामें
जोरहस्यकछुनिसरै ताकोसज्जनकरहिंबिचार । प्रथम
अर्द्धकौशल्यहिदीन्हा सोपूरणअनुपमकरतार ॥ अपर
अर्द्धजूठनितबबनिगोस्वामीसेवकभावउदार । बिन्दु
मकारएकसेजानहु चाहतहहिंदोऊआधार ॥ पंचम
देवसबनमें खेलैंनिजनिजअंशनकेअनुसार १५ ॥

पराभक्तिकौशल्याजननी तहांभयोप्रभुकोअवतार ।
बिन्दुरूपअसतपनकहतहैं प्रभुस्वरूपतोअकथअपार ॥
परब्रह्महूजाकोगुणहै केहिगनतीमेंतवओंकार । देवनाम
मंगलप्रसंगमेंयाकोसबकहिहौंबिस्तार १६ ॥

मंगलमयप्रभुजन्मसमयमें अतिउत्तमदशयोगपरे ।
अपनेअपनेनामसदृशफल दशौंजनावतखरेखरे ॥ ऋतु
पतिऋतुपुनिआदिमासमधु शुक्लपक्षनितधर्मभरे । अंक
अवधनवमीशशिवासर नखतपुनर्बसुप्रकृतचरे ॥ योग

सुकर्मसमयमध्यंदिनरविप्रतापजहँअतिपसरे । जयदाता अभिजितमुहूर्त्तवरपरमउच्चग्रहपांचढरे ॥ नवमिपुनर्बसु परमउच्चरबिकबहुंनतीनिउँसंगअरे । यहितेदेवरूपकछु लखिये गायगायगुणपतिततरे १७ ॥

कोशलेशदशरथकेद्वारे गहगहनौबतझरनलगी । झांगडझांगडझांगडझांगड घडघडधांघडघडधांघडघड धांधमकैंपरनलगी । ततथेइथेइताथेइताथेइजहँतहँगणि-काकरनलगी ॥ तेहिसमाजकीछबिदेवहुकेतनमनधन को हरनलगी १८ ॥

प्रभुअवतारहोतत्रिभुवनमेंझमकिरह्योहैमंगलचार । रावणचित्रारविअथयेकौ भासबकेमनमोदअपार ॥ रंभा सीरंभानिरततहैंकरतअशोकअशोकपुकार । रावणगृह पीड़ितदेवनकी बंदिनिवारतबंदनिवार १९ ॥

प्रथमभक्तिज्ञानमनोकेकयीकुमार जनोसुभगपुष्य नखतमनोमीनलगनपायकै । विद्याज्योंबोधविनयसुमिता ज्योंदोयतनयसर्पनखतवृश्चिक में राजतजनमायकै ॥ गणवभयोचारभागजीवनकोभागजाग बाढ़तरामानु-रागबारबारगायकै । याकोरसमहादेव जानतहैंसकल भेवमौनभयेतेऊ जसगूंगोगुड़खायकै २० ॥

नामकरणगुरुआपकियोहै क्षत्रिनकोअधिकारनहीं । नामब्रह्मउपदेशप्रथमहै सोकेवलविप्रहिसेचही । हिर-ण्यनाभअसनखतनामभो परमारथमेंरामसही । राम नामकेगुणकछुबरणौं जसिउपनिषदनराहकही २१ ॥

महामंत्रश्रीरामनाम सबरामचरित्रलखावतहै ।

लौकिकबैदिकअर्थजहांलौं तिनहूंकोदरशावतहै। राकाऱादिमकारादिकपदजोरतहीमनभावतहैं। जैसेराजत महिमण्डलमेंतातेरामकहावतहैं। रावणराजमथनइत्यादिकचरितसमूहजगावतहै। अर्थनिधानभयोयाहीते महिमावेदबढ़ावतहै। जोनिर्गुणसोगुणहैयाकोसमुझत समुझतआवतहै॥ श्रुतियोपुरुषपदैसेजहँतहँदेवंरूप झलकावतहै २२॥

भासिरह्योजोअपनी भातेतामेंरतयेसततरहे। गुरुवशिष्ठं यहकारणगुणिकैकैकेयीसुतभरतकहे। गौरअंगसवऔगर्भहिसेशीशचँदोलालक्ष्मगहे। तातेनामकियोलक्ष्मणअस शिरपरधरतीभारबहे। मोहशून्यभयशून्यकालत्रय अशुचिशून्यलक्ष्मणमुरहे। तीनिशून्यसेसहसशोर्षतायामें कछुनप्रमाणचहे। देखिसुदर्शनरूपकह्यो गुरुनामशत्रुहन शत्रुदहे। देवरतनचारिउसुत दशरथ मानहु सुकृतसमुद्रमहे २३॥

जनकरायकेमंदिरआई आदिशक्तिजगतारणमाय। जगमगज्योतिजगैदीपकसी कोमलललितकमलसेपाय। फागुनकृष्णसप्तमी भृगुदिन अनुराधाध्रुवलगनौगाय। मातुभूमितेप्रकटभई हैं रहाजगत में मंगलछाय। सीता हलरेखाकोकहिये जेहिरेखासेसीरलखाय। तेहिरेखासे निसरी कन्यातातेसीतानामकहाय। देवशक्तिगंगा औ कमलाईतीनिउँसियमेंठहराय। जन्ममासभादौंऔमाधव भलेलोगगावतअर्थाय २४॥

अलैया। कोशलेशडांवरोगोरोएकसांवरोदेखिआ

तांवरोमुनिसंगजातहैं । बयसकिशोरनईसखिनचपलता गईबातअजुगुतभईदलफलखातहैं । छोटेछोटेधनुशरलसतदोउन्हकरआगेपाछेपदचरअतिमृदुगातहैं । मुनिदेवधर्माचारखलतहँबिघनकार येताकेरखवारएतोठइरातहैं २५ ॥

धनाश्री । रघुपतियहडाइनिआवतहै । कहँमुनिभयउपजावतहै । नामताड़कावड़ीपापरुचिबनचारिनसंतावतहै । याकोसुतनास्तिकपखंडयुतमखमेंधूममचावतहै । बाघसिंहनरशूलपोइकैप्रापिनिइतउतधावतहै । मनहुंउठीवागरकीआंधी ऐसीधूरिउड़ावतहै । नारिजानिकरुणाजनिकरियेयाकोबधमोहिंभावतहै । हतहुबेगिसंध्यानगिचानीसांझभयेबलपावतहै । एकबाण उरतकितबमारा मरतहुंभूमिकँपावतहै । देवलोकसो चलीदेहतजिरामसुयशसोउगावतहै २६ ॥

अलैया । यागकरनलागे मुनिजनअनुरागेसुभुजसदलजागेपरीलराईहै । रामएकशरडारोताहीसेसुभुजजारोलपणदलसंहारो साथरीचलाईहै । रामतुक्काचलायोतेहिमारीचउड़ायो लेइलंकामेंगिरायोवड़ीफुरताई है । मुनिसबहरषे देवफूलबरषे रामरूपपरषेसुमतिथिराईहै २७ ॥

एतोवड़ोमुनिज्ञानीजायनृपसुतआनी श्रौतबितानतानीअसझलकावत । कर्मबिनुज्ञानकथास्नेहबिनुदीपयथादूनोंकीगँथीगँथा भयेफलपावत । कर्मज्ञानकोजगावैज्ञानतमकोनशावै कर्मबिनुबूझिजावै ज्ञानतम

छावत। याहीतेकरमज्ञानसंगजबलगिग्रानतजेधरिअ-
भिमानपतितकहावत २८॥

काफ़ी। असिजड़तानिर्मूलकरैको जसिजड़तापाईमुनि
नारिहियाहिसँवारनकोउभरैको। महाघोरपतिश्राप
अनलमेंमूढ़शलभसोंजायजरैको। श्रुतिहुउपायकहतजहँ
हारीतहँबरवसशिरविपतिबरैको। पाथरतेनरतनुपावन
कोकोटिन्हजन्मसुकर्मचरैको। तऊअहल्यातनुतौदुर्लभ
यहिअघटितमेंवृथापरैको। वहीरूपवहिज्ञानवहैसब
मनमतिकहँजड़बीचफरैको। केवलरामचरणारजसमरथ
तेहिबिनुदूसरदेवढरैको २९॥

अलैया। नादबिंदुसीतारामएकगोरीएकश्यामछवि
गुणधामदोऊमिलेईमिलायेहैं। पाइकैसुमनबागदोऊ
ओरभावजागसांचोअनुरागतबदोउनबढ़ायेहैं। रुद्रधनु
प्रतिबंधजेहिकियेनृपअंध गुरुको सुगन्धलेइरामभँग
रायेहैं। बरबधूमिलिगयेसबहिंअनंदभयेसुखनितनये
देवदुन्दुभीवजायेहैं ३०॥

धनाश्री। मनहिंमनभृगुपतिकरतविचारमारुतको
अवतार। तैजसचक्रसुदर्शनकोमैंकीन्होंगर्वप्रहार। सब
भूपतिमोहिंदेखतकांपहिंदवतननान्हकुबार। गतिसर्वत्र
अखंडितमोरीमैंहौंप्रबलजुझार। सांपपवनज्योंतेजहंसा-
रोअँचवतगोरकुमार। आपनधनुआगेकरिबोलेया-
कोखैंचुगरार। होइगयोधनुसगुणआपुसे सगुणब्रह्म
अनुसार। लाजभईअस्तुतिअतिकीन्हीं पहिचानाकर-
तार। तपधनदंडदेइवनगवनेकहिजयदेवउदार ३१॥

काफी । प्रीति अलौकिकरामसियाकी । कहिनजाय मनहींमनभावैजहांनहीं गतिजंतुजियाकी । यहहिय वाहियसेसबबोलतवहहिययासेकहतहियाकी । दोउ हियमेंपश्यंतीप्रकटीचलनिनमध्यमवैखरियाकी । कहे सुनेदेखेजगहोतभावगतिपुरुषतियाकी । गुणधन रूपतीनिसेउपजैऔबिनशैरतिसोंबिषियाकी । झूठी प्रीतिभूमिगंधोकीमिटतअंतमेंजसिबनियांकी । परमा-रथसियारामदेवकीप्रीतिएकरसनहिंदुतियाकी ३२ ॥ इतिबालकाण्ड ॥

अथ अयोध्याकाण्ड ॥

धनाश्री । भरतसेडरकछुभूपहिरही । नाहिंतौ भरतगयेनंनिअउरेअसकसगुरुसनकही । अपनेभावहि के बिगरेतेहोत उपाधिसही । तबदेवनहूंअवसरपावा बानीजायगही । एकराहभारतिहुविचारीबहुतबिषाद दही । राजारामसदासेनइन्हहियुवराजताचही । याही कोफलअनरथप्रकटारावणकेशिरढही । देवलोककी-कण्टकमानोछावामंगलमही १ ॥

झंझौटी । मुनिकामनमेंठहराया सदलभरतपहु-नाया । रामगयेबनपितामरनभासुनतभरतबउराया । धर्मबिरोधजनहुमेंनिंदित ताहूपरफुरमाया । मुनिकौतुक मोहितसबबोलहिंआजुजन्मफलपाया । अवधिनजावन जावरामपहँ हमइहँवैघरछाया । ऋद्धिसिद्धिसंपति

समाजसुखभरतहिं नाहिंसोहाया । ज्योंत्योंरातिबिताइ-
प्रातउठि मुनिचरणन्हशिरनाया । देवसुखौज़ेहिकहँ
नहिंभावैतेहिकिराजसुखभाया । अनरथमेंनभरतसंमत
कछुइतनैअर्थदिखाया २ ॥

पथमेंकोतापसयहआवासुन्दरकियेबनावा । राम
सरिसलघुबयसमनोहर अनुचितपदशिरनावा । सुत
समजानि अशीशदीन्हसियलक्ष्मणअंकलगावा । यह
नातोनबुझाइतासुपुनिगमननकाहूगावा । रावणवध
संकल्पआइकैभलतेहिचेतधरावा । यहिनातेसीताकरसुत
सोरामहिमाहँबसावा । कामहिकी अनुहारिहोतसब
श्रुतिअसडंकबजावा । देवचरित्रमनबचनअगोचरअल-
खहिकौनलखावा ३ ॥

धनाश्री । भरतनकैसेउँराजचहा । यद्यपिकैकेयीबर
यांचामनुऐसेनकोत्यागकहा । तबरघुवीरबिचाराभूपति
युवराजैपददीन्हअहा । भूपअछतयामोरेआछतसोपदले-
तनदोषरहा। आपनप्रतिनिधिदीन्हखड़ाऊंतबदूनौंनिब-
हा । राजनलेहुहोहुयुवराजायहमतभरतगहा । भरत
रहनिसेलागिगयोहैदोषजहांकोतहां । देवचरितयहसब
हींजानासांचोन्यावथहा ४ ॥ इतिअयोध्याकाण्ड ॥

अथ आरण्यकाण्ड ॥

झंझौटी । सोकाजयंतगुणजाना ज़ोवनिगौकागम-
लाना । दिव्यदेहपुनिइंद्रदुलारोआयोइन्द्रसमाना । यह
प्रक्षिनमेंअधमजाहिछुइ सुमतिकरहिंअस्नाना १ महा

मोहकोरूपकागहैसबसेबहुतसयाना।इंद्रजालयाकेअंगन
मेंरुद्रहुकेमनमाना२सगुणकहैधमाँकोपालकजाहि नित्य
वलिदाना।रामतेजबलपरिखनकारण आयोकलानिधा-
ना ३ मारीचोंचकुचनकेअन्तरदाड़िमतेहिअनुमाना।राम
देवपहिचानिलियोतेहिछोड़िदियोकरिकाना ४।१॥

धनाश्री। लक्ष्मणयहविराधरिपुआया करियेकवन
उपाया। जनुकठोरपनरूपधरेहैखरकोपरमसहाया।कर
त्रिशूलधरधूरिउड़ावतजाकोतनिकनदाया १ देखतसो
सीताहरिलेइगारामधोखबड़खाया। कोमलतापरिपाक
शरन्हसेजीवतताहिगिराया २महिखनिकैजोगाड़िदियो
सोअपनेरूपमिलाया। दूसरजन्मभयोजनुसियकोराम
चरणशिरनाया ३ हर्षेरामसियातनहेरेअनुजहिकयठल-
गाया।देवदुंदुभीबाजनलागींरायसुयशबड़छाया ४।२॥

झंझौटी। भाईपंचबटीकेरन में बड़ोरंगसमुझनमें
चाहसुपनखासदासोहागिनिखेलिरहीमनवनमें। लषण
दासतेहिकेधरिकाटेनाककानयकक्षनमें १ खरहैक्रोधलो-
भहैदूषणकामबसैत्रिशिरनमें कामैक्रोधलोभबनिदरशै
तीनिउँएकैतनमें २हतेसदलत्रिशिराऔदूषणकोउनबचा
सैननमें। इन्द्रअस्त्रखरकेउरमारा जयजंयभइत्रिभुवनमें ३
पांचौबटतेपंचवदनहैंत्रिंवकवरदेवनमें। अजस्थानसोजन
स्थानहैजोउत्तमक्षेत्रनमें ४।३॥

बसंत। महामोहरावणसेयहसबबातसुपनखैंजायक-
ही। सोबोलातिनकरवधनाहींयहवधमोरैभयोसही।बड़ो
द्वारलंकाकोटूटोअबअसदूसरबीरनहीं।संगपखंडलेइतब

धावायाकोउत्तरदीन्हचही। दंडकुसुंभकमण्डलधारीबनि कैगासियआश्रमही। कंदमूलफलदेनउठीसियबंधीभीख नहिंलेउँयही । कुंडलसीलक्ष्मणकेधनुकृतरेखनांघिसि यठाढ़िमही।देवचरित्रनजानतकोऊसोरावणघरजायरही ४ घोरकवन्धकर्मबंधनसोंरामलषणतहँआयफँसे । ताके दोउभुजकाटिगिरायेज्ञानखंरगसोंबहुतकसे।भक्तिरूपशं-वरीकेआश्रमतबदोऊजनजायधसे । ज्ञानरूपसुग्रीवकहा तेहिरामदेवमनमाहिंहँसे ५ ॥ इति आरण्यकाण्ड॥

अथकिष्किन्धाकाण्ड ॥

बिप्ररूपमारुतसुतआयो ऋष्यमूकपररामवसे।ज्ञान मान बालीअतिदुर्दमताकेभयसुग्रीवग्रसे । ताकोएकबाण सेमारातबसुकण्ठनिजपदबिलसे । रामदेवकीदयापाइकै रावणवधकोकपिहुलसे १ ॥

सोरठ। पवनसुतरुद्रहिकोअवतारपोंछिमनहुंओंकार। उग्रनयनमुखविकटदशननखकृतनिश्चरसंहार । भूतप्रेत गणसंगरहतहैंकदलीबिपिनबिहार १ कार्तिककृष्णपक्ष कीचौदशिसांझसमयशनिवार । मेषलग्नमेंप्रकटभयेयह समयौंकरतपुकार २ मदनसदनवाईंहनुटूटीलागावज्रप्र-हार । मदनदहनकोलक्षणझलको याकोकरहुविचार ३ बुद्धिवंतचिरजीवीबलनिधिलक्ष्मणप्राणअधार । इष्टदेव रघुनायकजाकेजोकपिदलश्रृंगार ४ ॥ इति किष्किन्धाकाण्ड ॥

अथसुन्दरकाण्ड ॥

बसंत। विषयबागअतिसुंदरलागा तेहिहनुमंतवि-

रागउजारतविसनीसेरखवारैमारे अक्षबसंतहुकोहतिडा
रत १ मन्मथइन्द्रजीततवताकहंबांधिमोहकीनजरिगुजा-
रत । लंकागढ़प्रवृत्तिकोफिरिफिरिपूंछअग्निसोंवरवस
जारत २ सोविरागयहिपारहिआवामहामोह अपनेजिय
हारत । राजयोगयुवराजहुकुमसेमधुवनवादहुकोरस
गारत ३ अनुभवचूड़ामणिकपिदीन्हादेखतरामनयन
जलढारत । देडंकादलसहितदेवतबहर्षितसागरतीर
सिधारत ४ । १ ॥

सुखसम्पतिंतन्निकैअधिकारीशरणबिभीषणआवाहै ।
साथचारिसाधनसेमन्त्रीछोड़िकपटशिरनावाहै । देखि
सत्यताऔरदीनतारघुपतिकेमनभावाहैकहिलंकेशतिल
कतेहिसाराडंकाकपिन्हबजावाहै । रावणअछततिलक
तेहिसारासोसीतहिसमुझावाहै । अवधिथोरिबाकीअस
सियकेरहाबहुतपछितावाहै । क्षणमेंप्रलयकरैऔउत्पति
जोअसश्रुतिमेंगावाहै । सोनरदेवबड़ोदललेइकैसागर
तटपरछावाहै १ इतिसुन्दरकाण्ड ॥

अथलंकाकाण्ड ॥

बिलावल । भलीप्रभुराजनीतिठहराई । अरिकेइष्टहि
अपनावनकोशिवथापनाकराई १ ज्ञानसुकंठतहांअगुआ
भौलेसाधनसमुदाई । भवसागरपरसेतुबनायोरामहिंकी
प्रभुताई २ नभपथजलचरसेतुपन्थसेउतरीसबकटकाई ।
गिरिसुबेलपरपरिगौडेरारावणसुनतडेराई ३ सुनतै
रावणअतिव्याकुलभाअपनीसैनबुलाई । मुरचनपरतशूर
धरेजिन्हजीतीदेवलड़ाई ४ । १ ॥

बसन्त । रामलषणदोउनहींसहोदरकोकिलमुनितौ तदपिकह्यो । यहसुनिसंशयकोउकरैजिनियामेंपरमरहः स्यरह्यो १ कहतउपनिषदसंगशेशओहरिकोगभौंमें निबह्यो । एहिप्रमाणतेभयेसहोदरअवकोवादबिवाद चह्यो २ कहकपिलक्ष्मणदुइमाताकेसुनतैसियबि- श्वासलह्यो । बालमीकिकेएहिवचनौंतेवहीसहोदरअर्थ सह्यो । एकउदरमेंबसेसहोदर पाणिनिमुनिअसअर्थ सह्योरात्रियुद्धमेंरामदेवहूऐसोमनमेंभावगह्यो ४।२ ॥

मेघमल्हार । मचोहैदोउनकोरणरंग । ज्ञानकटकइत उतमोहैकोकामादिकदलवंग १ अहंकारसेकुम्भकर्णको रामकियोमदभंग । दासभावमन्मथकोजीततलेविराग कोसंग २ औरलड़ीजोड़ीसनजोड़ीसाधनअंगउपंग । जोड़ीलड़ीरामरावणकीरावणभाअतितंग ३ नाभिसुधा सत्ताकेसोखतभानिरजीवनिहंग । बिजयभयोश्रीराम- चन्द्रकोदेखिदेवभयोदंग ४ । ३ ॥

भैरव । महामोहकोजीतिअवधमेंरामचन्द्रसम्राजभये । इन्द्रियप्रजाचरतसुधरमकोउपजतसुखनितनित्यनये १ मनकेंवशइंद्रियमनमतिवशमतिआतमकोंरसअँचये । आ- तमपरमातमयेदोऊरामराजनिजरंगरये २ घटघटमेंनिज रूपैदेखतयातेबैरबिरोधगये । एकएककोहितचाहतहैराम राजसमभावछये ३ रामचरणअरचतनरनारीपरमारथ कोबीजबये । यहिआनंदमेंसदाबसहुतुमदेवहुअसवरदान दये ४ ॥ इतिलंकाकांड ॥

—*—

अथरामसेवा ॥

जाजवन्तीकवनीनिंदियासोयरहेउअबजागहुजियरा तीनिपहरतौसोवतवीतेचौथौकाहेखोयरहेउ १ जगभोगीतरुकरयोगिनकोनिशाभागअसहोयरहेउ। चारिपहरमेंचारिउजागहिंतूकसग्रनरथबोयरहेउ २ सूखहाड़से इनविषयनमेंरसकूकरसोंटोयरहेउ । कामक्रोधमदमोह लोभकोनाहकबोझाढोयरहेउ३ श्रुतिबचननसेजागातव मलदेवनदीमेंधोयरहेउ। सीतारामचरणरतिउपजीहरि गुणमालापोयरहेउ ४ । १ ॥

देवोत्थापनविभास । मंगलउषासमयदिनमुखहै । जहँतहँलोगजागेगौवैंदुहनलागे लोहियालगनकोरुख है १ नखतझलमलायेचंदहुलटकिआयेरजनीहोइरही सुखहै २ हवालागेतनहूंमेंकामिनीकेमनहूंमेंपियबिछुरनकोदुखहै ३ देवदेवजागौअबद्वारखड़ेदाससबदेहु जगतकोसुखहै ४ । २ ॥

भैरव १ बंदीजनवेदमहाराजकोजगावैं।ललितमधुरस्वरसँवारिबिमलसुयशगावैं १ योगज्ञानधर्मचरित कोटिजन्मजावैं । रावरोस्वरूपबिना जानेफिरिआवैं २ छवोशास्त्रउलटिपलटिजीभिमनथकावैं। राउरलील.पियूषअँचइठौरपावैं ३ नामब्रह्मकोनजानिबादकोबढ़ावैं । नाममेंअनामताविलासदेवभावैं ४ । ३ ॥

बाजतवीणामृदंगतालबांसुरीउपंगबढ़ततानकोतरंग नादब्रह्मजगिरह्यो। नाचततथेय्यथेय्यकरनतालद्वेय्य देय्यउपजविविधलेय्यलेय्य सुनिमुनिमनडगिरह्यो १

साजमनहुंकमलपुंजतहांउठतभँवरगुंजयाहीमें रागकुंज समुझतमनपगिरह्यो। होनलागडाटडपटबीचबीचझांक झपट बेवँतलियेपरतत्रिपट गुणिजनमनठगिरह्यो २ झमकिधमकिघूमिझूमि आइजाइताकिडाकि नूपुरझनकारझरतातिनमेंजियलगिरह्यो। साजनाचदूनौंमिलि गीतहीकोपुरनकरततीनिहुंमेंएकरूप रागतागतगिरह्यो ३ जहँनजाइइंद्रियमनशब्दतहाँकरैगमनजगेदेवरमारमनपापदोषभगिरह्यो। उघरेतबसुभगद्वारहोतआरती प्रकारभक्तनकोमानसश्रीरामरंगरँगिरह्यो ४। ४॥

आरती ललित। मंगलआरतीश्रीरघुपतिकीतिमिरहरनि अगतिनकेगतिकी १ तुम्हरेजगेसकलजगजागै बलिहारीसुंदरमुखरतिकी २ अंगनकीछबिकेहिविधिवरणौंपहुंचनहींकाहूकेमतिकी ३ श्रुतिहुनजानिसकैप्रभुमहिमा लघुतेलघुकीअतितेअतिकी ४ बाहरदेवखड़ेकर जोरेआशाएकचरणरजनतिकी ५। ५॥

रामचरणपूजनविधिदिनदिननिर्मलज्ञानजगावत है अनायासहंकारधोइकैरामरूपदरशावतहै १ आसन पाद्यआदिशब्दनमेंसदृशलक्षणाआवतहै। याहीतेउपचारनामभौपात्रोयही दृढ़ावतहै २ अंगनसहितदेह अर्पणकरिममतासकलछुड़ावतहै। तबममताभइईश्वरहीमेंअहंदासअसभावतहै ३ अंशीमेंअंशैबनिरहिहैफिरितैसेउपजावतहै। निर्विवादसोदेवदासकोभेदसदाश्रुतिगावतहै ४। ६॥

श्रुतिस्मृतितंत्रपुराणपंथसेपूजनप्रभुकोनितकरिये।

बचनअचारभावऔअस्तुति क्रमसेचारिउकेधरिये १
आसनमूलाधारसमर्पणआगेउँऐसेहिअनुसरिये । इहि
विधिकरिअंगनकोअर्पणभवसागरसुखसेतरिये २ अंग
अंगकेतमनाशनकोनीराजनपथमेंढरिये । साढ़ेतीनिहि
बेरफेरियेप्रणवरूपताकोबरिये ३ देवहोइकैदेवपूजिये
याबचनहुंकोआदरिये । आतमसोप्रिययामेंबरन्योडरिकै
बादहिपरिहरिये ४ । ७ ॥

भैरव । आरतीकरियेसियबरकीनखशिखछबिधरकी
लालपीतअंबरअतिसाजैमुखनिरखतशारदशशिलाजै ।
तिलकचिलकभालनपरराजै कुंकुमकेसरकी १ कर्ण-
फूलकुण्डलझलकतहैंचन्द्रहारमोतीहलकतहैं करकंकण
कीछबिछलकतहैं जगमगदिनकरकी २ मृदुतरवनमें
अधिकललाई हासबिलासनकछुकहिजाई । चितवनिकी
गतिअतिसुखदाईमनहीमनफरकी ३ सिंहासनपरचँव-
रढ़रतहै साजबजतजयजयउचरतहै । सादरअस्तुतिदेव
करतहैंलोठरनिअनुचरकी ४ । ८ ॥

अलैया । महाराजआइये राजभोगपाइये ठाढ़ीहैं
कुवाँरीकन्याकरलियेआरती । करतमंगलगानमधुरउ-
ठतातान तृपितनहोतकानजनुगावैंभारती । द्विजमंत्र
उच्चरतबैश्वदेवसपरत जननीपियारकरितनधनवारती ।
रावरीपियारीछबिबरणिनसकैकवि देवहूकेहियमेंदीप
जनुबारती ६ ॥

भोजनकेचारिथानतेईचारिभूतजात भरनचहतनभ
भरिनहिंसकते १ पेटहीकोकारलागोज्ञानध्यानसब

त्यागोकबहुँनजियजागोवेदबकिथकते। पेटकीलपेटही मेंत्रिभुवनबुझिरहो प्राणनिरोधतहाँयोगीजनतकते यामें बड़ोदेवज्ञान याहीमेंजीवनप्रान रामअमियरसबारबार छकते १० ॥

मोहतखलकहियप्रत पलकनहिंआरती झलक हियतिमिरभगावती भवनजगमगातहुलसतरामगा- त ज्योतिमनहुंरामरंगजगावती सहसकिरणजनुकरत प्रदक्षिणमाचोध्रुवजानिदेवमतिहिंखगावती जीवनधन वारिवारि रामआरतीउतारि साधुरसनांपदप्रेमकोलं- गावती ११ ॥

टोड़ी। सुखबिश्रामकरौप्रभुआई शशिसोंधवलप- लंगबन्योमनमृदुताबसनबिछाई श्रुतिकियासुधरम सितचादरश्रद्धाचँवरढुराई रागद्वेषसमदंशनलागहिंबहै पवनसुखदाईसुयशसुगंधक्षमाघनछायाचंदनभूमिरचाई सिद्धिचूहरीकीगमनाहींबीरबिरागतकाई भोजनकेपरि- पाकहोंनलगिमुनिननीतिअसिगाई करजोरेबिनवतब्र- ह्मादिकदेवकरैंसेवकाई १२ ॥

सारंग। प्रभुकीआरतिसज्जनसाजैं धोइनयनयुग करदर्पणलियमुखतांबूलबिराजैं बिहितसलाकासेआं- खिनमेंसुरमाअंजनआंजैं केसरभालसैअंगनमेंभूषण अम्बरभ्राजैं बिरदावलीपढ़तबंदीजनमृदुधुनिनौबतबाजैं जयजयकारहोतनभमण्डलद्वारेहयगयगाजैं अगरधूप बहुमहमहमहकैपापदोषदुखभाजैं बर्षहिंदेवसुमन या छबिकीकोकरिसकियेदाजैं १३ ॥

धनाश्री।आवतरघुनायकखेलिशिकारतुरँगनचढ़ेधनुष शरहाथनकमरत्रोणतरवार १ नीलरंगकोबागापहिरे भाइसखापरिवार। संगअहेरीकमठाबांधेदेतजातलल-कार २ भूपतियोगीशायकसाधनमनवनमृगहैमार। ताहिजीतिनृपराजकरतहैंमृगयाकोयहसार ३ फहरत ध्वजडंकेघनगाजतकरतनकीबपुकार। आयेरामदेव तबजननीलेइआरतीउतार ४। १४॥

गौरी।रामआरतीहोनलगीहैंजगमगजगमगज्योति जगीहै। कंचनभवनरतनसिंहासनदासन्हडासेझिल मिलडासन। तापरराजतजगतप्रकाशनदेखतछबिमति प्रेमपगीहै १ महकतधूपबरतमहताबीझलकतकुंडलरवि छविदाबी अंगअंगसुंदरताफाबी आनँदकीसरिताउमगी है २ घंटाघड़ीमृदंगबजावतनूपुरपगभरिनाचतगावत पूरतशंखहिचँवरडुलावतसुनतैदूरिबलायभगीहै ३ रूप देखिजननीहर्षतहैंअँजुरिनदेवसुमनवर्षतहैं करिदंडवत चरणपरसतहैंसुमतिरामकेरंगरँगीहै ४। १५॥

हमीरकल्यान॥ अवसरनाहिंयेमिलैलगोईरहैदरबार। बहुतरातगइभूखेहोइहैंबारबड़ेसुकुमार १ द्वीपद्वीपकेभू-पतिआयेकसमसठाढ़ेद्वार। दिननहिंचैनरैननहिंनिद्रा न्यावहिको रोजगार २ तबपठयेकौशल्यामातहिंश्रुति बंदीजनचार। नाथभईबेराब्यारीकीअसितिन्हकीन्ह पुकार ३ सवापहरमेंनिशिभोजनहैआगेअसुरअहार। यहजियजानिउठेश्रीरघुपतिदेवनकीन्हजुहार४। १६॥

जननीमुखकोदेखिरही कुछनहिंजायकही। सजि

आरतीउतारनलागीआनँदथोरनहीं १ जयजयराघव रविशशिकुण्डलशोभाअधिकचही। मुक्ताहारबिराजत मानहुगंगाधारबही २ जयजयसुन्दरनयनचरणाकरनख शिखचारुसही। जयजयललितबिचित्रचरितप्रभुकीन्ह सुहागिनिमही ३ करिआरतीकरावतिव्यारूमाखनदूध दही।जूठनचहतदेवइन्द्रादिकजन्मसुफलतालही ४।१७॥

कामोद ॥ पउढ़ौप्रभुआई योगिनकेमानसमेंआनँद सेजबिछाई। चारिउवेदपलँगकेपायेअंगउपंगसहाई ॥ पराभक्तिठकुराइनिबिलसैशिरतकियासुधराई १ कोऊ बुद्धिपलंगबिछावत पायेचारिउपाई। तहांपराविद्या ठकुराइनिअनुभवरससरसाई २ ब्रह्मादिककीगतिजहँ नाहींपवनौजहांनजाई। भक्तिसहिततहँसुखसेसोवहु जगमगज्योतिजगाई ३ प्रबलबिरागजहांकोपहरूसि- द्धिउनहिंनगिचाई। शयनआरतीहोनलगीहैं देवकरत सेवकाई ४।१८॥

शयनआरती ॥

कामोद ॥ जगमगजगमगआरतिकीजै रामरूपहिय मेंधरिलीजै। सबज्ञाननकीज्योतिजगाई जुदाजुदाफिरि एकमिलाई तेहिमूरतिसोंअलखलखाई जेहिसुमिरत हियकोतमछीजै १ अंगअंगप्रभुकेपहिचानीतिन्हमेंअपने अंगनसानी। दासभावदृढ़मनमेंआनीतनमनधनअर्पण करिदीजै २ सियमेंरामराममेंसियहैंगन्धभूमिसेएकैजिय हैं दोऊकल्पतातियऔपियहैं ऐसोरामरसायनपीजै ३ जाकीछबिसोंजगतछबीलोजाकेरससेजगतरसीलो जाके

गुणसेगरूगँभीलो जानिदेवसोयुगयुगजीजै ४ । १६॥
इतिरामसेवा ॥

अथसीताहनुमतसम्बाद ॥

काफी ॥ करजोड़ेहनुमानखड़ेहैं । सीतारामवरणपं-
कजमेंसारजानिसबभांतिअड़ेहैं १ बलनिधिगुणनिधिओ
विद्यानिधिजाकेहृदयबिरागकड़ेहैं । सीतारामभक्तिताहू
मेंकंचनमेंजनुरतनजड़ेहैं २ सकलबासनागलितभईहैं
मानहुंद्रुमकेपातझड़ेहैं । अबनवपल्लवलागनचाहतऐसे
भागभलेउघड़ेहैं ३ रामचन्द्रबोलेसीतासेयेउपकारीमोर
बड़ेहैं । मोरहृदयउपदेशहुइनकहँप्रेमसमुद्रसुनतउमड़े
हैं ४ । १ ॥

होरी ॥ हनुमतकहँउपदेशश्रीजानकीकरतहैं । कंकरि
लकुईमटीकाभांड़ाकबहींलगैगीठेश ॥ ऐसेतनकाकौन
ठिकानाजहांनसुखलवलेश १ करनाहोयसोकरलेअबहीं
कालधरेहैकेश । आइअचानकमारिहैवहघरमेंयापरदेश २
खेलतखातहँसतऔबोलतजातजन्मयहखेश । जनमत
मरतमरतपुनिजनमतहोतनहेशननेश ३ कहौंजगतगति
औरविषयगतिपराभक्तिरसबेश । जोसुनिरामचरणरति
उपजैमिटैसकलकवलेश ४ । २ ॥

पैभेदनपावैझूठजगतअसगावै । लयउतपत्तिदेखि
याजगकी झूठोअसठहरावै ॥ सत्यअसत्यउभयश्रुति
बोलततामेंबादमचावै १ भयोसत्यतेझूठजगतकिमिकौउ
असियुक्तिबनावै । वहउपनिषदबिचारेबिनुभल नाना
पंथचलावै २ सत्यअसत्यउभयमिलिजगयह अकथ

कथतनहिंआवै । नीलुपीतमिलिहरितभयोजसतीसर रंगकहावै ३ सत्यअसत्यउभयपदकहिकै जगको अकथ लखावै । जैसेपूरणदेव अकथहैयहमतमनमेंभावै ४ । ३ ॥

कोउकोउयहलखिपावाजगहैरामबिहार । पूरण रामस्वरूपभावमय जगताकोबिस्तार । एकएकको बहुतदेखावतजैसेभाष्यबिचार १ भावविशेषएकउत्तर शतमहाभावएकसार । नानाभावनतेअसझलकतएकै वहकरतार २ द्वंद्वसकलनिर्द्वंद्वलखावत अपनोप्रकटि बिकार । एतोसारबिचारजगतकोनामभयोसंसार ३ ऐसोनित्यविलासरामकोदासनको आधार । सकलदेव ब्रह्मादिकनिरखहिंसतचितमोदाकार ४ । ४ ॥

जगढूंढ़िरह्योहैकेवलसुखकोभाई । कर्मकरतसुखही केकारणसुरनरमुनिसमुदाई १ सतचितमेंसंदेहनहींकछु तिसरोगयोढेराई २ चितआनंदपंखदोउसतके ऐसीस-मुझिनआई । तातेब्याकुलहोयफिरतहैकरतअनेकउपाई ३ चितसाधनआनंदसुफलहैसत्यमूलठहराई । सोईराम अवधमेंराजतसीतालषणसहाई ४ । ५ ॥

बिषयौनहिंपहिचानाबिरथैलपटाना । बिषयकिये सुखहोतसहीपैतैंकारणकाजाना । अंगनमेंसमभायभयेते मनबटुरतबहिराना । सोसुखविषयनसेभाषतहैयहकेवल अज्ञाना २ चिन्तामेंनविषयसुखद्वाईयहितेकरुअनुमाना मनथिरतैसेसुखउपजतहैमनबटोरनादाना ३ थिरमन मेंरामैझलकतहैं जलमेंमुखजसमाना । सुखस्वरूपदेवैको सखकनविषयनमेंछतिराना ४ । ६ ॥

रामचरित्रनिमाना कपिमहीकियोहै। रामजनमसे आदिलेइकैराजकरनलगिनाना १ अचलअकर्मसकल घटवासीरामरूपनहिंजाना।मोरोरूपननीकेपरिखातिन रामहिंकरमाना२ राहुछांहसेचन्द्रश्यामजसतसमैंसइरा माना। रामछांहसेचेतनहोइकैकीन्हेबिबिधबिधाना ३ जलमेंरबिजसराममोरेमहँ सुन्दरतेजनिधाना। परा-भक्तिबसुखसेबनिहैघटघटदेवसमाना ४।७॥

काफी॥ असहनुमन्तबिचारकरतहैं। रामचन्द्रपूरण छबिसीतादीननकेपरितापहरतहैं १ सीतैरामरामहैं सीतादोऊएकैदेखिपरतहैं। दोऊजगतारणकीसीमाके-वलप्रेमहिपायढरतहैं २ आदिसियहिमोहिंनहिंउपदेशा भेदभावयद्यपिनधरतहैं। छायहिसेउपदेशकरावाकीधौं कपितादेखिडरतहैं ३ यहविचारिचितवतरघुबीरहिमन महँरामनामसुमिरतहैं। अन्तरयामीजानिहियेकीआपुइ देवबचनउचरतहैं ४।८॥

सुनुहनुमंतज्ञानघनमेरोजाहिबिनासबजगतअँधेरो। जीवेश्वरदुइआतमगायेजीवतहाँईश्वरकोचेरो॥देहभयो दूनोंकीटीकायातेसोबिग्रहकहिटेरो १ उदितप्रथमप्रति बिम्बईशहैतामेंकछुनहिंतमकोडेरो। आगेकोटिन्हप्रति-बिम्बनमेंजसअन्तरतसतमकोघेरो २ सोईतममायाकहि गाईरचतजीवगणबिबिधघनेरो। तमअनुसारकर्मतब लागेयहिविधिमायाजीवहिपेरो ३ जड़उपाधिकीअंतर तमहैताहितजेजोरहतवड़ेरो। जीवेश्वरतेपृथकतीसरो अवधदेवसोजगतउजेरो ४।९॥

कहरवा ॥ नाचिउठाकपिसुनिप्रभुबानी ॥ यहंगति खोजतमुनिवरज्ञानी। विनुप्रभुकृपाजायनहिंजानी १ ग्रंथनकेझगराउरआनी। मतिभरमैदिनदिनहितहानी२ सहजहितरतचरणरतिमानी। मांझधारबूड़हिंअभिमानी ३मनखोटोपावत हैरानी।तुमतौदेवदयाकेखानी४।१० ॥

मननथिराइभँवरअसछटपट। योगहुसेमनहोलालट पट।अतिचंचलसेउहौबड़अटपट१ करतैकरतजगतकेखट-पट। कोउनलखैउड़िजायपक्षीचटपट २ जबयमकैचट-कनलागीपटपट। अकबकनचलीविसरिजाईसटपट ३ कयलचहसितौकइलेझटपट। चरणकमलसेहोइरहुगट पट ४।११॥

शोचहुकाहेभयलमनचलबल। जोस्वभावसेमानहु हलफलातौकाहेकेकहेसिश्रुतिकलबल १ पवनचढ़लमन तैसेखलवल। आनकैछूतइहौतोरगलबल २ जबजिय उठैविषयकैकलबल। तब बउरहीकरैऊँटजैसेबल-बल३ जनमंजनमकै बाढ़लमलवल। रामभजैबनैछोड़िकै छलबल ४।१२।

तोरभल होईजोकहलकछुमनबे। मरमिनसेमिलि जबरसछनबे तबकैसेगुरुखोइयाएकमेंसनबे १ रसरस जबइन्द्रिनकेतनवेयहिमनमेंजगमगतबआनबे २ बनत-बनतरामैतेबनबेतारूगुरुलागैदेअपुनैजनबे ३खनतखन ततरलैजबखनबेरामरसचीखिहुइभावनठनबे ४।१३॥

हनुमतकहतबचनहरषायकै। जरतरहेउँमैंविषय रसखायकै। बाचेउँतोरसुधारसपायकै १ नतौमरतेउँ

तनमेंलपटायकै । जैसेमाछीमकरीकेजालअरुझायकै २ केउचाहउकछुफलबहुतमनायकै। मैंतौचाहौंदासपनोविनयसुनायकै३ देवदेवदेउबरइहइअघायकै।भजउँनिरंतर पदमनलायकै ४ । १४ ॥

धनाश्री । प्रभुकीदासताबड़ीदूर कोउपावैभरिपूर। कर्मयोगसाधेउतेवनिहैज्ञानौझांखरझूर । वहतो रामअनुग्रहहीतेमिलैसजीवनमूर १ चारिमुक्तिजाकेपसिगेमेंचहतचरणरजधूर । अहंभावकोदासवनावतपरमारथपथशूर २ जोनितअव्ययदाससोईभौकाजानहिंगे कूर । कैसेमृगमदगंधलहहिंतेजेढोवतहैंघूर ३ दानीदासकलपतरिवरसोंरामरंगमेंचूर । जाकेहियनयननमें झमकैरामदेवकोनूर ४ । १५ ॥

बिहाग । तौक्यादासप्रभुकाहुवा मूढ़जोतूविषयलम्पट कपटकरिकरिमुवा १ कर्मडोरिनबँध्योपरबशपर्योतैसे सुवा। मुक्तिदायकसंतपदकोरंगकबहुँनछुवा २ वारबार करारकरिकरिगिरतफिरिफिरिकुवा। झारिदोंउकरजात जैसेहारिज्वारीजुवा ३ जौनतमकोडाटिजगमगभागसूरजउवा। देवदुर्लभजौनमुखपरनामअमृतचुवा ४ । १६ ॥

कहरवा । रचिकजौलागनपावै रामरंगपरसंग तौछुवतैवीछीकारसज्योंरोमरोमचढ़िधावै १ हियसमुद्र तबउमगैभाईआंखिनमेंरसआवै। रामझलकमेंमगनहोइ कैरामरामरटलावै २ मलकेअमलकहतसबकोईकेअब इनहिंमनावै । रामरंगमेंमलनहिंहिते सोईअमलकहावै ३ ईरसपोथिनसेनहिंनिसरैके ऊनभाठिचुआवै ।

दिअंतसगुणाकीठटहै मध्योमेंसोइताना ५ अहंभावतजि दासबने हैं नहींमानअपमानगनेहैं। रामचरणरजजाइ सनेहैं तेईदेवकेप्राना ६। २० ॥

बालकयोगीज्ञानी तीनिउंनिर्मलनयना बालकके दृगरसनहिंउतरायोगीनितकोध्यानीज्ञानी। अंतरदृग शोधेहैंदुंदनकोभलछानी १ कफइच्छाअभिमानमइलसे दृगमेंहोतमलानी। जैसेहिमघनधूरिसंगतेदेखियतरबि छबिहानी२ दर्शनसेदृगशोधतकोऊहोइजातअभिमानी। द्रष्टाकीदृगशक्तिनजानीबीचहिमतिभ्रमसानी ३ दृगहू केदृगरामलषणसियअसमतिजिनउरआनी। तिनकेच-रणशरणमैंआयोंइष्टदेवसमजानी ४। २१ ॥

काफी। सबकेमतसेभजनहीआवत ब्रह्महिंभजत कोउकर्महिंकोउतौशिवशक्तिहिगावत १ अद्वैतौमेंद्वैतसदा हैनाहिंतौकैसेफिरिउपजावत। याहीतेजगसत्यकहतश्रु-तिझूठनजन्नसांचतेपावत २ जोपरमाणुमहत्वौसाथैऐसे सबमेंसाथथहावत। नजकाअर्थैनहींविचारत अहंकार सेबादबढ़ावत ३ एकौमेंपुनिअंगबहुततेसेवकस्वामीभाव बनावत। आपुइदेवदासपुनिआपुइदूनोंनित्ययहैमत भावत ४। २२ ॥

समुझिसमुझिमदसुखहिभराहै तबकपिप्रभुकेचरणा पराहै। मैंकपिपामरपशुअतिविषयीशुभआचरणनकबहुं कराहै। ऐसेहुपरश्रीवदनचंदते वचनसुधारससरस झराहै १ केवलप्रभुकरुणौसे स्वामीचारिउयुगमेंजीव तराहै। ताहितमायिकसाधनकेवलकोउधरिहिअरु

कोउधराहै २ साधनकोफलरामअनुग्रहजाकोअंतभरोस पराहै । भयेउँकृतारथकरतबनाहींमहामोहतमदूरि ठराहै ३ सीताकपिसंवादभयोअसजेहितेजनकोकाज सराहै । सांचीसांचदीनतैलखिकैजबतबपूरणदेवढरा है ४ । २३ ॥ इतिसीताहनुमत्संवादः ॥

अथरामराज्यवर्णन ॥

होरी । अवधपुरीमहँछाये चारिउचरणधरमके । प्रथमचरणतपज्ञानदूसरोक्रिया कलापसहितमखतिसरो कैसेउदानचौथपदनिसरोसबकहँभक्तिबनाये १ वर्णाश्रम नीकेलागतहैं यथाकालसोवतजागतहैं । निजनिजधर्म हिंअनुरागतहैं रामचरणरतिपाये २ जोपवित्रतारामचरणमेंधर्मकहावतसोइकरणमें।जोप्रकाशसोज्ञाननरण मेंअंगीरामसोहाये ३ ज्ञानादिकेप्रभुश्रीरघुपतितिनहीं केकरसकलजगतगति सत्यकहौंइतनिहिंमोरीमति श्री गुरुदेवलखाये १ । २४ ॥

षटऋतुवर्णन ॥

सारंग । अवधकेग्रीषमकीबलिहार रामप्रतापदिन-हुंदिनबाढ़तभाजड़तापरिहार १ रामबाहुछायामेंसब कोउसुखसेकरतविहार २ मानसपदुमनकोरचिरचिकै रामहिंअरपतहार होतनरामचंद्रकरुणासेजीवन को अपहार । सुमनसुगन्धचहूंदिशिमहकतकरतरामउर हार ३ राजसमाजरजोगुणपूरणजामेंजीतनहार । देव-रूपमेघनरसआगमसावनघनअनुहार ४ । २ ॥

अवधमेंनितवर्षाऋतुरहै सोप्रकारकविकहै गज़माथन तेदानझरतहैंबड़ीचमकतरवारधरतहैं। गजगाजहिंधौंसे घहरतहैं डगरडगररसबहै १ वीरवहूटीरमहिंचैनमें। बहुतयामको जगहिरैनमें छुईश्यामताकेशनयनमेंचहल पहलचहचहै २ त्रिविधतापकेनामगयेहैं जीवजंतुसब हरेभयेहैं । नचतदाससुखपायनयेहैं धर्मछांहसबगहै ३ जासुखकोब्रह्मादिकतरसैं मुनिवरसपनेहुंजाहिनपरसैं रामदेवसोसुखनितबरसैं ऊंचनीचसबलहै ४ । ३ ॥

मलार कवित्वचौताला । रूपघटाछायरही पीतपट दामिनिसो मुक्तनकेहारतेवलाकामोरदासहैं उन्नतसिंहासनचढ़िमहारसवर्षिरह्यो उदितवधनुषजामेंतीनि गुणनकेप्रकाशहैं मुकुटकेरतनखद्योतमेकयाचक्रगणचरित्रनदीकरयब्रह्मसिंधुमेंविलासहैं। रामदेवसावनसेजग मनभावनहौराउरछविछटादेखिबढ़तमनहुलासहैं ॥

सोरठ। अवधमेंनितहींशरदविलाश । निर्मलमानस अंवरपूरणसियपतिचन्द्रप्रकाश १ सुयशचन्द्रिकातारा निर्मलकुमुदमनोहरहास तोपअगस्तिक्षमाशरदीसेमिटे दोषदुखडांस २ नीलपीतलोहितसरसोहतसेतचँवरते कास । दीपकसेनरनारिभक्तजनुस्वातीमुक्तनिवास ३ परमभक्तचातकसेजिनकहँरामविन्दुकीप्यास । देवचकोरभयेजेहिकेवलरूपदरशकीआस ४ । ५ ॥

भैरव । हिमऋतुजनुअवधमें बसोआनंदपायकैआपन दिसदेशजानिगुनेकलाबनायकै १ सुरसजहांअरोगता विलाशनिशाभायकै। सुखकेसेदिवसजातमनहुंधायधाय

कै २ ब्रह्ममूलनखतउपररहतभानुआयकै । यातेयह सम्वत्कोआदिकह्योगायकै ३ शरदहिमवसंतकहेश्रुति मेंविलगायकै चंद्रभानुदेहौकोनूतनठहरायकै ४ । ६ ॥

वसन्त । नितवस्योअवधमेंजनुप्रयाग जोपरमशिशिरऋतुकोसोहाग सीताछविनिर्मलकरनिरंग रघुपति छबियमुनासदासंग । दोउनकोअनुरागरंगसोइप्राचीशारदअंतरंग १ शूलटंकधनुवाणठ्याल वदनसोमशितरदनमाल । अक्षयवटहनुमंतलालहोतपरसिजेहिजननिहाल २ भानुचन्द्रकोयोगजात श्रवणमकररविठ्यतीपात महापर्वमेंबुधनहात ३ तजिदेहभावकहँकोऊधीर लहत अमृतपदवेदहीर भूदेवन्हकैभईभीर उमगतअनंदजनुती रतीर ४ । ७ ॥

होरी बसन्त । महकैसियअंगबसन्तसोई करपल्लव कोमललालसे मुखचन्दचुवै रसबोलसदा पदपंकज मानसमेंबिकसे शरलोचनभौहँकमानकसे जगजीतनको जनुकामबसे अलिकुन्तलयोवनरंगवनो समतालखिकै नरदेवहँसे १८ ॥

होरी । होयरहीऐसीहोरी श्रीअवधपुरीमें । सुमति सोहागिनिसबसंतनकीप्रेमरंगमेंबोरी । रामकथापिचकारचलावतलक्ष्यरामकीबोरी १ सुरतिनिरतियोगिन कीसखियांनजरिएकटकजोरी । रामझलकमेंमगनभईं हैंजैसेचंद्रचकोरी २ दोउनकीउपाधितजिज्ञानीअसिलभावटकटोरी। आतमरामहिंसेबिहरतउपनिषदनकीवरजोरी३लालगुलालअरगजापुरजनखेलिरहे खोरीखोरी।

पतितचरणपंकजरजहीसेचाहतप्रीतिनथोरी ४। ६॥

होरीसिन्दूरा। मेरेनितहीरहैहोरीवसन्तसखिराम दुलहकोपाया प्रेमरंगपिचुकारचलतहैलालगुलालउड़ाय इकटकदेखिरहीवाहीकोदेहदशाबिसराय। बनोदेवसेवक कोनातोमंगलगायबजाय १०॥

होयरहीहैहोरीरामबागनमेंनित कोइलगावतभवँर वजावतनिरन्ततरंभाधोरी १ फूलरंगरसबुंदझरतजनु महकउड़तचहुंवोरी पंछीमनहुप्रशंसकझूमतआगमको झकझोरी २ सीयभूमिआरामरामजूमिलीसनातनजोरी चंपककेसरधारपरतहैओढ़रदाड़िमरोरी ३ कुसुमितलता मनोहरतेजनुबालउमिरअतिथोरी कामदेवकोसखाल-षनजनुबढ़तनेहकीडोरी ४। ११॥

तेरीसूरतिमनमेंगड़िगई। देखतरूपझलकदूरिहि तेमेरीअँखियांलड़िगई १ पूरणरामदयासेनीकीपासेकी गतिपड़िगई। मानोकंचनकेभूषणमेंहीरामोतीजड़िगई २ रामतिहारीमूरतिदेखतकर्मनकीगतिअड़िगई मायागुण सुभावकालहुकीअखुरीपखुरीझड़िगई ३ रामसनेहसुधा-रसचीखतविषयनकीरतिखड़िगई रामदेवतुममैंअनुचर हौंअबतौऐसीमड़िगई ४। १॥

बड़ोयहझगड़ाअबलागा। मायाजीवकोराममायाकहै मैंकमलबासिनीसुनुरेजीवअभागा। पदकमलोंमेंमहीं रहौंगीतैंकाकरसितहँरागा १ जीवकहैसोबिमलहंसपद तूमलीनजसकागा। वाकोतेरोनहींमेलमिलतहै वृथालु-गावसिदागा २ मायाकहैतूचेरोहमारो सदाविषयरस

पागा । कासरबरहमहींसेठानी झूठोपहिरिकैबागा ३ सुनुमायाप्रभुचरणकमलमेंदासनहींकोभागा। पराभक्ति ठकुराइनिहमरीतेरोनलगिहैथागा ४ मायाकहैतूमेरोब नायोजीववचनतबमांगा।आपुगईआनहुकेखोवतसमुझिसिनीकननागा ५ प्रभुबोलेतनदासहमारोइंहांनतेरोतागा। तूअभावमेंझलकिरहीहैसुनतजीवतवजागाद्।१३॥

होरी । अबकलियुगआवाघटघटपातकछावा। कलिकोप्रथमचरणजिनिजानो द्वापरअघदुइचरणवखानो। प्रथमहिंकोतिसरोकरिमानो चौथोडंकवजावा १ झूठपखगडअकर्मअदाया पापचरणकोचौकलखाया। चरण धर्मकोएकबचाया सोईबीजबनावा २ ज्ञानयोगजिवलेइपराने धर्मकर्मकेरूपहेराने । कलिकेडरसाधनथहराने नामैपारलगावा ३ नामप्रतापसदोदितजागा जाकेडरकलिकोतमभागा । बाढ़तदेवचरणअनुरागा जाको ड यशश्रुतिगावा ४। १॥

झँझौटी । ब्यापाकलियुगकाशाकासबपुरुषारथथाका । लोगईश्वरैकेनहिंमानैंश्रुतिकीकहौंकथाका । बापहिबापनकहै सोकैसेकहिहैकाकहिकाका १ कामआदिभटछेकिरहेहैंधरमपंथकोनाका । इनहिंमारिकैनिबहिजाइजगकोअसजनमावांका २ दिनदिनचोरअधर्मीबाढ़ेपरधनको जिन्हताका । जोकोउचढ़ैधर्मकेपथपरपरैताहिपरडांका ३ जिन्हअपनीरसनायहरोंकीनारीमुखनहिंझांका । रामनामको खड्गलियेते निबहेहांकीहांका ४।१५॥

यारोनेकीअबकरना आखिरको है मरना ॥ धन यौबनकेजुलुमजोमसेएतानहींउछरना । कधीजाल मेंफँसिजावैगा ज्योंजंगलकाहरना १ गनीगरीबोंको हकनाहकऐसानहींरगरना । दोदिनकोहसमतयहतेरी साहेबकोकुछडरंना २ कुफुरकरैअधरमकीदौलतमसल बांसकाफरना । अभीतुझेमालुमनहिंपरता अंतपड़ैगा भरना ३ जानिबूझिटेढ़ेरस्तेमें बन्देंकदमनधरना ।देव देवकहिरामरामरटिभवसागरकोतरना ४।१६ ॥

होरी । इन्हथोथिनपोथिनकोतजिकैवहपोथीक्योंनहिंपढ़ता है । जिसपोथीकोपढ़िकैब्रह्मा अंडपिंडको गढ़ताहै । जिसपोथीमेंमगनसदाशिव जालिमजहर न चढ़ताहै । सोपोथी तोहिंदेवपढ़ाई रामजहां से कढ़ताहै १७ ॥

लोगकहैंरामबसतअवधमेंरामबसैंयाहीघटमें । कठपुतरिनकोकौननचावततारधरेअंतरपटमें । बैठिइकंत पैठिकै देखोझिलमिलसरयूकेतटमें । रतनसिंहासन जगमगतापरबैठेरामबड़ीठटमें १८ ॥

होरीसिंदूराकोउकैसेदेखाइसकैवाप्रभुको आंखिनहूं कीआंख । जैसेमाखनचाखनकोरससोइजानैजोचाख । यामेंतिलभरिऔरनमानौकोउकहौकिनलाख । रामदेवनितजियमेंजागोमेरोयहिअभिलाष १९ ॥

झंझौटी । नहिंमरमकिसीसेकहना आयपड़ैसोसहना । बकबादनमेंसारनहींहैज्योंपानीझामहना । कंथनी

छौंड़िसाधसंतनकीकरनीरहनीगहना १ क्षमासाधिकै कोपअग्निसेसुखीजीवनहिंदहना । जानिबूझिकै मोह नदीमेंबारबारक्यावहना २ देखिऔरकीदौलतदुनियां कधीनहींकुछचहना।आपैसेतौआयमिलैगाधराअपानालहना३ जायइकंतरामकोभजनाकिसमतमाफिकरहना । औरनसेक्यामतलबहमकोराजाहोइकिसहना४।२॥

काफी। तेहिदिनहँसिहँसिमंगलगाउब । जेहिदिन पियदेखबघटहीमें उनकेअँगसेअंगलगाउब १ सखी सखाजहँपहुंचिनसकिहैं तेहीमहलमेंपलँगडसाउब । नखशिखरूपदेखिप्रीतमकोजनमजनमकी जरनिबुझाउब २ झूठेखेलछोड़िगुड़ियनको सांचेपियसेनेहबढ़ाउब । प्रीतमसंग अगमसुखभोगवभूलिहुकै नैहरनहिं आउब ३ देवधरमअपनोदृढ़करिकैसावत जियराताहि जगाउबानातिलबढ़ोनघटोरतीभरिजसक्रोतसहैअसठहराउब ४। २१ ॥

अवधसेदिनदिनबाढ़उनेह । अँचइसुधारसश्रीसरयूकोजाउबिषयरसतेह १ रामचन्द्रपदनीकोलागउजस मूढ़नकोदेह । खाइबमनसेमनसेउबिठयुधनदारासुत गेह २ केवलपदहीसेगतिभाईसंतनकीमतयेह। बेपदकीजोवातकहैकोउताकेमुखमेंखेह ३ संतचरणरजबिमलकरउमनजैसेपटकँहरेह । देवदेवकरुणासेबरसउ सदाधरमकोमेह ४। २२ ॥

बसंत। हितमीतबनारसभूपतिके युवराजमहामति-

मानधनी । श्रीरामप्रसन्नप्रसन्नरहैं यहरामसुधायहि हेतुबनी । मुनिअंकअठारह संवतमेंतिथिमोहन जन्म अनन्दशनी । अबकृष्णसुधाछबिदारसुनौजेहिमेंबरणी सबबातछनी २३ ॥

इतिउत्तरकाण्ड ॥

इसपुस्तकको पण्डित रामसेवक व पण्डित बन्दीदीनजीने शुद्धकिया ॥

1400